



THE
MENTORING
PROJECT

एक विद्रोही किशोर का बाइबल आधारित पालन-पोषण कैसे करें: नियंत्रण से सम्बन्ध की ओर



AUTHOR: DR. RICHARD PERHAI
EDITOR: DR. LARRY OATS

एक विद्रोही किशोर का बाइबल आधारित पालन-पोषण कैसे करें: नियंत्रण से सम्बन्ध की ओर



लेखक: डॉ. रिचर्ड परह्राई

सम्पादक: डॉ. लैरी ओट्स

विषय-वस्तु

परिचय: विद्रोही का हृदय.....	4
विद्रोही का ईश्वर विज्ञान	7
परिवार की मूर्तियाँ.....	9
अनुग्रह की शब्दावली	12
अनुशासन का व्यवहारिक पक्ष	15
दीर्घकालीन दृष्टिकोण.....	18
निष्कर्ष: सुबह अवश्य होगी	23



परिचय: विद्रोही का हृदय

पाठक से प्रतिज्ञा: नियंत्रण से सम्बन्ध की ओर

यदि इस समय आप उस जोर से बन्द किए गए दरवाजे के दूसरी ओर खड़े हैं और यह सोच रहे हैं कि आपसे कहाँ चूक हुई, तो यह मार्गदर्शिका आपके लिए है। हम पालन-पोषण के सतही “नुस्खे” से आगे बढ़कर पारिवारिक जीवन के गहन ईश्वर विज्ञान आधारित सत्य पर विचार करेंगे। इस भूमिका के अन्त तक आप समझ जाएँगे कि आपके बच्चे का विद्रोह आपके किसी “तरीके” की असफलता नहीं है, वरन् यह मनुष्यजाति की उस समान दशा को दर्शाता है, जिसका हम सभी हिस्सा हैं। हम यह भी उजागर करेंगे कि नियंत्रण के भारी बोझ को छोड़कर सुसमाचार-केंद्रित प्रबन्धन की परिवर्तित करने वाली सामर्थ्य को कैसे अपनाया जाए।

ताले के बन्द होने की आवाज: जब पालन-पोषण धराशायी हो जाता है

मैं एक बार मार्क नाम के एक व्यक्ति के साथ उसकी रसोई में बैठा हुआ था। वह ठण्डी सेंकी हुई डबलरोटी के एक टुकड़े को देख रहा था और मेरी आँखों में देखने का साहस नहीं कर पा रहा था। क्योंकि उसकी बेटी ने अभी-अभी उसे गलत तरीके से पुकारा था, और अपने कमरे का दरवाजा जोर से बन्द कर लिया था और भीतर से ताला लगा लिया था। ताले के बन्द होने की वह आवाज उसके लिए मानो गोली चलने जैसी थी। मार्क ने दबी हुई आवाज में कहा, “मैं नहीं जानता कि वह कौन है। मैंने उसके लंगोट बदले हैं। मैंने उसे साइकिल चलाना सिखाया। और अब मैं उसके लिए केवल एक ऐसा व्यक्ति रह गया हूँ जो वार्ड-फाई का बिल भरता है और जिसकी बात पर वह चिल्लाती है।”

यही इसकी वास्तविकता है। यह कोई आकर्षक पुस्तिका नहीं है। यह उस कठोर वास्तविकता का वर्णन करती है कि आप अपना जीवन एक बच्चे के लिए उपडेल दें, और बदले में वह आपके साथ गन्दगी के समान तुच्छ व्यवहार करे। आपको ऐसा लगता है मानो आपके अपने ही घर में एक गहरी खाई खुल गई हो, और आपकी पहली प्रतिक्रिया यह होती है कि सम्मान की माँग करें या चिल्लाएँ। परन्तु क्रोध के नीचे केवल भय छिपा हुआ होता है। हम इसलिए डर जाते हैं क्योंकि हम इस झूठ पर विश्वास कर बैठते हैं कि सब कुछ हमारे नियंत्रण में है। हम पालन-पोषण को एक स्वचालित विक्रय मशीन के समान समझते हैं: जिसमें बाइबल के वचन डालिए, और बदले में एक विनम्र तथा सफल बच्चा पाइए। परन्तु मनुष्य इस प्रकार कार्य नहीं करते हैं।

मसीही वातावरण में पले-बढ़े होने के बावजूद भी मेरा बच्चा इतना विद्रोही क्यों है? इसका सीधा और स्पष्ट उत्तर है: मनुष्य का सम्पूर्ण पतन। यह कोई सूखा सा पाठ्यपुस्तकीय शब्द नहीं है। यही वह वास्तविकता है जो तब दिखाई देती है जब आपका बच्चा आपके सामने झूठ बोलता है। और यही वास्तविकता तब भी प्रकट होती है जब आप अपना आपा खो बैठते हैं और बदले में उत्तर देते हुए आप क्रोध से भड़क जाते हैं। पाप परिवार के पहियों में घर्षण उत्पन्न करता है। रोमियों 3:23 के अनुसार, "क्योंकि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" हम सब परमेश्वर की रचना और उसके उद्देश्य से चूक जाते हैं। हम उस सर्वोत्तम दशा से चूक जाते हैं जिसे वह हमारे लिए चाहता है। हम महिमामय परमेश्वर के स्वरूप को धारण करने वाले विश्वासयोग्य जन होने से भी चूक जाते हैं। और यदि हम अपने बच्चों का उपयोग अपने ही अहंकार को सहारा देने के लिए करें—यह चाहते हुए कि वे केवल इस लिए "अच्छे" हों ताकि लोग हमें सफल माता-पिता समझें—तो हमने अपने ही बच्चों को मूर्तियाँ बना देते हैं।

सबसे उत्तम किशोर: जंगल से मिलने वाली शिक्षाएँ

यदि आप इतिहास पर दृष्टि डालें, तो परमेश्वर के लोग सबसे बड़े विद्रोही थे। इस्राएल एक आत्मिक किशोर के समान था। परमेश्वर उन्हें दासत्व से निकाल ले आया, परन्तु वे भोजन के विषय में कुड़कुड़ाए। उसने उन्हें स्वर्ग से रोटी दी, परन्तु उन्होंने माँस माँगा। वह धीरजवन्त और टढ़ रहा, और इससे भी बढ़कर वह उनके निकट बना रहा। उसने कोई "आसान उपाय" नहीं अपनाया। उसने उन्हें स्वयं को दे दिया। उनके विद्रोह के बावजूद भी उसने उनके बीच में वास किया।

मैंने मार्क से कहा कि उसे हर हाल में "जीतने" का प्रयास छोड़ देना चाहिए। आप अपने ही बच्चे के विरुद्ध युद्ध नहीं जीत सकते हैं। आप केवल उसका मन जीत सकते हैं। यह ऊँची आवाज़ में बोलने से नहीं होता, वरन् मसीह के समान बनने से होता है। एक मसीही माता-पिता को अपने विद्रोही किशोर के प्रति कैसी प्रतिक्रिया करनी चाहिए? सुसमाचार की ओर दृष्टि करें। जब हम विद्रोही थे, तब मसीह ने अपने अधिकारों की माँग नहीं की (फिलिपियों 2:5-8)। वह हमारे संसार में आया और हमारे द्वारा अस्वीकार किए जाने को सह लिया, ताकि वह हमारा उद्धार कर सके। निश्चय ही, हम मेरे के समान चुप रहकर अपने बच्चों का उद्धार नहीं कर सकते हैं। परन्तु यदि आपका बच्चा आप के भीतर मसीह के समान अनुग्रह नहीं देखता है, तो उसके लिए यह विश्वास करना कठिन हो जाएगा कि ऐसा अनुग्रह परमेश्वर में भी है। तो फिर, मसीह के समान अनुग्रह कैसे दिखाई देता है?

एक आत्मा का प्रबन्धन: घर का लम्बा मार्ग

पालन-पोषण करना कोई निर्माण की प्रक्रिया नहीं है। यह पालन-पोषण का विश्वासयोग्य प्रबन्धन है। आपका बच्चा सृष्टिकर्ता की ओर से आपको कुछ समय के लिए सौंपी गई एक आत्मा है। आप इस बात के लिए उत्तरदायी हैं कि आप उसके साथ कैसा व्यवहार करते हैं—अपने विश्वासयोग्य होने के लिए, अपनी दयालुता के लिए, और अपने पश्चात्ताप के लिए—परन्तु उसके हृदय का अन्तिम परिणाम आपके उत्तरदायित्व में नहीं है। वह परमेश्वर का कार्य है।

हम ज़ोर से थक्का देकर बन्द किए गए दरवाजों और भारी मौन के विषय में बात करेंगे। हम इस बात पर भी विचार करेंगे कि जब आप तकनीकी दृष्टि से सही हों, तब भी आपको सबसे पहले, "मुझे खेद है," क्यों कहना चाहिए। यह अस्वीकार

एक विद्रोही किशोर का बाइबल आधारित पालन-पोषण कैसे करें

किए जाने के बीच प्रेम के व्यावहारिक पक्ष की बात है। हम बाहरी आडम्बर को हटाकर विद्रोही के हृदय तक पहुँचने का प्रयास करेंगे, और यह स्मरण रखेंगे कि जो हाथ खुला रहता है, उसी को परमेश्वर सचमुच अपनी शान्ति से भरता है।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

क्या बाइबल यह निश्चित कर देती है कि "बालक को शिक्षा देना" सदैव सफल होगा? नीतिवचन 22:6 एक नीतिवचन है, जो जीवन के सामान्य ढंग का एक सामान्य अवलोकन प्रस्तुत करता है; यह कोई ऐसा कानूनी नियम नहीं है जिसकी निश्चितता दी गई हो। प्रत्येक बच्चे की अपनी इच्छा और अपना मन होता है, जिसे परमेश्वर के अनुग्रह के साथ व्यक्तिगत रूप से व्यवहार करना होता है। और हमें यह भी जानना आवश्यक है कि वास्तव में "बालक को शिक्षा देना" का अर्थ क्या है।

विद्रोही स्वभाव वाले बच्चे के साथ अनुग्रह और अनुशासन में सन्तुलन कैसे बनाए रखें? अनुग्रह का अर्थ सीमाओं का अभाव नहीं है, वरन् उन सीमाओं को लागू करने की वह भावना है जिसके साथ उन्हें लागू किया जाता है। अनुशासन का उद्देश्य केवल बाहरी व्यवहार को सुधारना नहीं, परन्तु हृदय तक पहुँचना होना चाहिए। यह परमेश्वर की उस भलाई को दर्शाता है जो मनुष्य को मन फिराव की ओर ले जाती है (रोमियों 2:4)।

यदि मैं अपने बच्चे पर क्रोधित हो जाऊँ, तो क्या मुझे उससे क्षमा माँगनी चाहिए? हाँ। अपने बच्चे से क्षमा माँगना आपके अधिकार को कम नहीं करता; वरन् यह सुसमाचार की सच्चाई की पुष्टि करता है। इससे वह देखता है कि आप भी परमेश्वर के अधिकार के अधीन हैं और आपको भी उसकी दया की उतनी ही आवश्यकता है जितनी किसी और को।

क्या मेरे बच्चे का विद्रोह माता-पिता के रूप में सदैव मेरी ही गलती होती है? यद्यपि हमें सदैव अपने हृदय की जाँच करनी चाहिए कि कहीं उसमें घमण्ड या कठोरता तो नहीं है (इफिसियों 6:4), फिर भी बच्चे स्वयं नैतिक उत्तरदायित्व रखने वाले व्यक्ति होते हैं। अद्वय की वाटिका में सिद्ध पिता—परमेश्वर—की भी सन्तानें विद्रोही हो गई थीं।

जिस बात को हम स्पष्ट रूप से देखने से इन्कार करते हैं, उसे हम चंगा नहीं कर सकते। विद्रोही के हृदय तक पहुँचने के लिए पहले हमें सुसमाचार को अपने ही हृदय तक पहुँचने देना होगा। आइए, अपने भय की रसोई से बाहर निकलकर उस कठोर वास्तविकता में प्रवेश करें कि परमेश्वर भटक जाने वालों के साथ किस प्रकार व्यवहार करता है। जब दरवाजा धक्का देकर बन्द किया जाता है, तब वास्तव में क्या हो रहा होता है, इसे समझने के लिए हम परमेश्वर के वचन के दर्पण में देखकर आरम्भ करेंगे।

1

विद्रोही का ईश्वर विज्ञान

शयनकक्ष में बगीचा: पतित इच्छाओं का टकराव

हर वह शयनकक्ष जिसमें कोई हठीला किशोर या किशोरी रहती है, उत्पत्ति 3 का एक लघु रूप है। जब हमारे बच्चे हमारा विरोध करते हैं, तो हम प्रायः चकित हो जाते हैं, मानो हम यह भूल गए हों कि विद्रोह मनुष्य का सबसे पुराना स्वभाव है। अदन की वाटिका में प्रथम मनुष्यों ने प्रेमी पिता की सिद्ध व्यवस्था को देखा, फिर भी उन्होंने उसके स्थान पर परमेश्वर से स्वतंत्र होकर स्वयं अपना मार्ग चुनना चाहा। वे स्वयं भले और बुरे का निर्धारण करना चाहते थे। वे “प्रबन्धक” नहीं, वरन् “स्वामी” बनाना चाहते थे। उन्होंने उस झूठ पर विश्वास कर लिया कि परमेश्वर उनसे कुछ अच्छी बात छिपा रहा है; कि उसके मन में उनके लिए उत्तम हित नहीं है।

जब आपका बच्चा विद्रोह करता है, तो वह कोई नई बात नहीं कर रहा होता है। वह केवल हमारी साझा मनुष्यजाति के प्राचीन मार्ग पर चल रहा होता है, और उन मार्गों के निशान बहुत गहरे होते हैं। परन्तु इससे भी कठिन सत्य यह है कि आपके घर का तनाव प्रायः केवल एक पापी के कारण नहीं होता। वह एक ही छत के नीचे रहने वाली दो (या अधिक) पतित इच्छाओं का टकराव होता है। हम आदर की माँग इसलिए करते हैं क्योंकि हमारे घमण्ड को ठेस पहुँचती है। वे स्वतंत्रता की माँग इसलिए करते हैं क्योंकि उनके घमण्ड को बन्धन लगता है। याकूब 4:1 के अनुसार, झगड़े और लड़ाइयाँ उन अभिलाषाओं से उत्पन्न होती हैं जो हमारे भीतर संघर्ष करती हैं। प्रायः हम दो विद्रोही होते हैं, जो एक बहुत छोटी-सी पहाड़ी का राजा बनने के लिए लड़ रहे होते हैं। और कई बार हम भी और हमारा बच्चा भी, उस पहाड़ी का राजा बनने के लिए लगभग कुछ भी करने को तैयार रहते हैं। यह पहचानना कि आप भी पापी हैं और एक पापी का पालन-पोषण कर रहे हैं, यह न तो आपके व्यवहार का और न ही उसके व्यवहार का बहाना है। परन्तु इससे हमारा दृष्टिकोण बदल जाता है। यह हमें स्वयं की धार्मिकता की मनोवृत्ति से निकालकर उस मनोवृत्ति तक ले जाता है जहाँ हम सबको समान रूप से क्रूस की आवश्यकता है।

सम्पूर्ण पतन और आईफोन: परदे के पीछे का हृदय

हम यह मानने के प्रलोभन में पड़ जाते हैं कि विद्रोह केवल एक “अवस्था” है या डिजिटल युग की उपज है। और हम इसका दोष आईफोन, मिलों के समूह या संस्कृति पर लगा देते हैं। यद्यपि ये साधन निश्चय ही पाप के लिए एक मंच प्रदान करते हैं,

एक विद्रोही किशोर का बाइबल आधारित पालन-पोषण कैसे करें

फिर भी वे उसके स्रोत नहीं हैं। मनुष्य के सम्पूर्ण पतन का सिद्धान्त हमें बताता है कि पाप ने मनुष्य के सम्पूर्ण आत्मा की प्रत्येक शक्ति—मन, इच्छा और भावनाओं—को भ्रष्ट कर दिया है। विद्रोह आपके पालन-पोषण की कोई तकनीकी त्रुटि नहीं है। यह हृदय की समस्या है।

परन्तु, छिपे हुए ऐप और फुसफुसाकर कही जाने वाली बातें केवल आधुनिक मार्ग हैं, जिन पर प्राचीन विद्रोह चलता आ रहा है। यदि हम केवल व्यवहार—जैसे अंकों या घर लौटने के समय—पर ध्यान दें, तो हम केवल डूबते हुए जहाज पर सामान इधर-उधर कर रहे हैं। पालन-पोषण का प्रबंधन यह समझना है कि केवल पवित्र आत्मा ही हृदय की शल्य-चिकित्सा कर सकता है। हमारा कार्य वचन के अनुशासन और सुसमाचार की गरमाहट को बनाए रखना है, ताकि अनुग्रह के कार्य करने का मार्ग स्पष्ट हो। जैसा कि यहजकेल 36:26 स्मरण दिलाता है, केवल परमेश्वर ही पत्थर का हृदय निकालकर मांस का हृदय दे सकता है। वही एकमात्र आत्मिक हृदय-शल्य चिकित्सक है।

तूफान पर प्रभुता करने वाला परमेश्वर: तपन के बीच विश्राम पाना

जब बच्चे भोजन की मेज पर बाइबल की आयतें सुनाते हैं, तब परमेश्वर की प्रभुता पर विश्वास करना सरल होता है। परन्तु जब वे संसार के नारे लगाते हैं और आपकी प्रार्थनाओं पर आँखें घुमाते हैं, तब यह कहीं अधिक कठिन हो जाता है। परन्तु परमेश्वर तूफान में भी वैसे ही उपस्थित रहता है जितना शान्ति के समय में रहता है। आपका बच्चा जैसा व्यवहार कर रहा है, उससे परमेश्वर आश्चर्यचकित नहीं होता है। उसने एक क्षण के लिए भी अपनी दृष्टि नहीं हटाई, और न ही किसी “भूल” को आपके पारिवारिक जीवन में प्रवेश करने दिया।

संघर्ष का यह समय केवल आपके बच्चे के पवित्रीकरण के लिए ही नहीं, वरन् आपके पवित्रीकरण के लिए भी है। परमेश्वर जोर से धक्का देकर बन्द किए गए दरवाजों और ठण्डी चुप्पी का उपयोग करके आपके आराम, प्रतिष्ठा और नियन्त्रण की मूर्तियों को ढ़र कर रहा है। वह आपको यह पूछने के लिए विवश कर रहा है, “क्या मेरी शान्ति मेरे बच्चे की आज्ञाकारिता में है, या मसीह की धार्मिकता में है?” जब हम परमेश्वर की प्रभुता में विश्राम पाते हैं, तब हमें महसूस होता है कि उस घर में सच्चा पिता वही है। वह आपके बच्चे से आपसे भी अधिक प्रेम करता है, और उस पर उसकी पकड़ आपकी पकड़ से कहीं अधिक दृढ़ है। हम घबराए बिना विश्वासयोग्य बने रह सकते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि सम्पत्ति के स्वामी के पास फसल के लिए एक योजना है, चाहे खेत बंजर ही क्यों न दिखाई दें।

2

परिवार की मूर्तियाँ

“अच्छे बच्चे” की मूर्ति: प्रतिष्ठा बनाम छुटकारा

प्रत्येक माता-पिता अपने भीतर एक छिपा हुआ लेखा-जोखा रखते हैं। हम अपने बच्चों के अंक, उनके व्यवहार और उनकी बाहरी सफलताओं का लेखा इस प्रकार रखते हैं, मानो वे हमारे अपने निवेश खाते का लाभ हों। हम एक “अच्छा बच्चा” पाने की तीव्र इच्छा रखते हैं—परन्तु आवश्यक नहीं कि उसकी आत्मा के हित के लिए, वरन् अपनी प्रतिष्ठा के लिए ऐसी इच्छा रखते हैं। यह परिवार की एक सूक्ष्म मूर्तिपूजा है। हम अपने बच्चों के व्यवहार को अपने अहंकार का सहारा बना लेते हैं। हम यह मान लेते हैं कि यदि वे अच्छे संस्कार वाले होंगे, तो हम सफल दिखाई देंगे—अर्थात् हम अधिक आत्मिक सम्मान के योग्य और आदरणीय ठहराए जाएँगे।

परन्तु यदि वही बच्चा विद्रोह करने लगे, तो सावधान रहें। हमारे चेहरे पर जो गर्मी महसूस होती है, वह प्रायः हमारे आहत घमण्ड की गर्मी होती है। जो कि होनी नहीं चाहिए। मुझे यह अच्छा नहीं लगता है। कुछ बातों को बदलना होगा। किशोरों के विद्रोह का सामना करते समय दुःखद वास्तविकता यह है कि हम प्रायः परमेश्वर से उनकी दूरी पर शोक नहीं करते। हम अपनी प्रतिष्ठा के खोने पर शोक करते हैं। शायद यह कलीसिया में हो या पड़ोस में भी। हम उनके विद्रोह को अपने पालन-पोषण के “ढँग” पर अपमान मान लेते हैं। परन्तु सुसमाचार-केंद्रित पालन-पोषण का नमूना हमसे अधिक कठोर ईमानदारी की माँग करता है। हमें अपनी आत्मा से पूछना चाहिए, कि “क्या मैं अपने बच्चे की प्रतिष्ठा की अधिक चिन्ता करता हूँ, या उसके छुटकारे की?”

एक मसीही माता-पिता के रूप में, यदि हम इस बात की अधिक चिन्ता करते हैं कि वे कलीसिया की बेंच पर कैसे दिखाई देते हैं, बजाय इसके कि वे सिंहासन के सामने कैसे खड़े होते हैं, तो हमने उन्हें अपने घमण्ड की वेदी बना लिया है। और यह एक ऐसी समस्या है जिसका सामना करना आवश्यक है। प्रबन्धन का अर्थ यह समझना है कि आपका बच्चा आपकी सफलता का कोई आभूषण नहीं है। वह भी आपके ही समान एक पापी है, जिसे उसी अनुग्रह की आवश्यकता है जिसे स्वयं से अर्जित नहीं किया जा सकता है, और उसी अनुग्रह ने आपका उद्धार किया है। क्योंकि जब हम अभी शत्रु ही थे, तब भी मसीह ने हमारे लिए प्राण दिए। बाइबल में इस प्रकार का पालन-पोषण हमें दिखाता है कि हमारे बच्चे अलग-अलग आत्माएँ हैं, न कि हमारे अहंकार का विस्तार हैं।

एक विद्रोही किशोर का बाइबल आधारित पालन-पोषण कैसे करें

नियन्त्रण बनाम प्रभाव: इच्छा की खाई

बच्चे को आज्ञा मानने के लिए विवश करने और उसका हृदय जीत लेने के बीच एक विशाल और दुर्गम खाई है। अपने भय के कारण हम प्रायः नियन्त्रण के गढ़ में शरण ले लेते हैं। हम नियमों की संख्या बढ़ा देते हैं, निगरानी को और अधिक कठोर कर देते हैं, और अपनी माँगों का स्वर ऊँचा कर देते हैं। हम ऐसा व्यवहार करते हैं मानो हम किसी के हृदय को नियमों के द्वारा अधीन होने के लिए बाध्य कर सकते हैं। यह भ्रम पर आधारित युक्ति है। नियन्त्रण केवल एक भ्रम है, जो तब तक ही काम करता है जब तक बच्चा इतना सामर्थ्य या इतना दूर न हो जाए कि उस बन्धन को तोड़ सके। इतना ही नहीं, माता-पिता के रूप में अन्ततः हमारा उद्देश्य यह होना चाहिए कि बच्चा हमारे नहीं, वरन् परमेश्वर के अधीन हो। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें वर्षों लग जाते हैं। किशोरावस्था इस स्वस्थ परिवर्तन के लिए, जिसमें माता-पिता के प्रत्यक्ष अधीन रहने से बढ़कर बच्चा प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के अधीन होना सीखता है। इसलिए इस अवसर का पूरा लाभ उठाएँ।

प्रभाव सुसमाचार-केन्द्रित और पालन-पोषण करने वाले प्रबन्धन का फल है। यह निरन्तर और त्यागपूर्ण प्रेम के द्वारा विद्रोह की खाई पर एक पुल बनाने का धीमा और धीरज के साथ कार्य है। नियन्त्रण अधिकारों की माँग करता है। प्रभाव मसीह का आदर्श प्रस्तुत करता है। आप किसी विद्रोही बच्चे का हृदय कैसे जीतते हैं? आप ऐसा सबसे पहले स्वयं पश्चाताप करके करते हैं। जब आप अपना आपा खो बैठते हैं या घमण्ड से प्रेरित होकर व्यवहार करते हैं, और फिर उसी जोर से थक्का देकर बन्द किए गए द्वार पर जाकर उससे क्षमा माँगते हैं, तब आप ऐसी सामर्थ्य का प्रदर्शन करते हैं जिसकी नकल नियन्त्रण कभी नहीं कर सकता। आप उसे दिखाते हैं कि सुसमाचार इतना वास्तविक है कि वह आपको भी तोड़ सकता है। क्योंकि आपको भी अपनी इच्छा को परमेश्वर के अधीन करना है। अपनी भावनाओं को परमेश्वर के अधीन करना है। अपने प्रत्येक निर्णय को परमेश्वर के अधीन करना है। तब भी करना है जब ऐसा करने से पीड़ा होती है। क्योंकि यह आपको स्मरण दिलाता है कि आपके घर में केवल एक ही राजा है। हृदय को जीतने का अर्थ वाद-विवाद जीतना नहीं, वरन् उसे यह दिखाना है कि मसीह उसके विद्रोह से कहीं अधिक सुन्दर हैं। वही सुन्दर राजा हैं।

संसार का भय: चिन्ता पर परमेश्वर की प्रबन्धकारी देखभाल

हम ऐसी संस्कृति में रहते हैं जहाँ बच्चों का आवश्यकता से अधिक पालन-पोषण किया जाता है; यह चिन्ता से प्रेरित एक घबराहट भरी रीति है, जिसे इस भय ने बल दिया है कि संसार हमारे बच्चों के साथ क्या करेगा। हम छाया को लम्बा होते हुए देखते हैं—जैसे सांस्कृतिक परिवर्तन, नैतिक पतन, और डिजिटल जाल—और फिर हम अपनी ही चिन्ता से एक गढ़ बनाने का प्रयास करते हैं। हम हर समय मँडराते रहते हैं और छोटी-छोटी बातों तक का नियन्त्रण करते हैं, क्योंकि हम वास्तव में परमेश्वर के प्रबन्धन पर भरोसा नहीं करते हैं। हम ऐसा व्यवहार करते हैं मानो हमारे बच्चे की आत्मा की सुरक्षा पूरी रीति से इस बात पर निर्भर है कि हम उसे हर ठण्डे झोके से बचा लेंगे।

परन्तु बाइबल के अनुसार हम किसी विद्रोही किशोर के साथ कैसे व्यवहार करें? इसका आरम्भ इस बात से होता है कि आप अपने कन्धों से बोझ हटाकर उसे परमेश्वर की प्रभुता में सौंप दें। चिन्ता इस बात का अंगीकार करना है कि हम विश्वास नहीं करते कि परमेश्वर इस उलझन का सामना करने के लिए पर्याप्त है। पालन-पोषण में प्रबन्धन का अर्थ है कि माता-पिता होने के नाते कठिन कार्य को करना—सीमाएँ निर्धारित करना, वचन की शिक्षा देना, और घर का प्रबन्धन बनाए रखना है—साथ ही अपने स्वर्गीय पिता में विश्राम पाना, जिसके हाथ में उनका भी कल, अर्थात् भविष्य है और हमारा भी। परमेश्वर

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

संस्कृति को देखकर आश्चर्यचकित नहीं होता है। वह संसार या इस संसार के देवता से भयभीत नहीं होता। वास्तव में, उसने संसार पर जय पाई है! जब हम भय के कारण आवश्यकता से अधिक पालन-पोषण करते हैं, तब हम अपने बच्चों को यह सिखाते हैं कि परमेश्वर छोटा है। जब हम भरोसे के साथ पालन-पोषण करते हैं, तब हम उन्हें पिता को दिखाते हैं, जो सड़क की सतह में दूरारें पड़ जाने पर भी "टढ़ गढ़" बना रहता है। हमें उनका उद्धारकर्ता बनने का प्रयास करना बन्द करना चाहिए और उन्हें उस परमेश्वर की ओर बढ़ाना आरम्भ करना चाहिए जो वास्तव में उद्धारकर्ता है।

हाँ, हृदय के लिए एक गहरा आत्मिक युद्ध चल रहा है। शत्रु आपके बच्चे को प्रभावित करने के लिए संस्कृति को एक हथियार के रूप में प्रयोग कर रहा है। परन्तु यीशु के साथ चलने वाले माता-पिता रालि-दृष्टि के चश्मे का उपयोग करके इस समय के दौरान अपने ही संघर्षों को पहचान सकते हैं, क्योंकि ये वर्ष प्रायः उनकी अपनी दुर्बलताओं और इच्छाओं को प्रकट कर देते हैं। उद्धारकर्ता, छुटकारा देने वाले के रूप में उपस्थित है। वह शत्रु पर विजयी है। वह विश्वासी माता-पिता में वास करता है। इसलिए, माता-पिता प्रार्थना के आत्मिक युद्ध में सम्मिलित हो सकते हैं। और माता-पिता अपने किशोर बच्चों के साथ उनकी असुरक्षाओं, विद्रोह, और उस विस्तृत होते हुए संसार के विषय में बातचीत कर सकते हैं जिसमें वे आगे बढ़ रहे हैं। जैसे सैन्य युद्धों में सही युक्तियाँ महत्वपूर्ण होती हैं, उसी प्रकार किशोरावस्था के कुछ वर्ष बाइबल के सत्यों को सिखाने और साकार सम्बन्धों को विकसित करने के लिए विशेष महत्त्व रखते हैं। साथ ही, यह स्मरण रखें कि आपका किशोर बच्चा शत्रु नहीं है।

3

अनुग्रह की शब्दावली

बोलने में धीमा: राल्फ-भोजन की मेज पर याकूब 1:19 को व्यवहार में लाना

राल्फ-भोजन की मेज प्रायः वह स्थान होती है जहाँ घर के सदस्यों का ईश्वर विज्ञान सड़क की कठोर वास्तविकता से मिलता है। मतभेद की तीव्रता के बीच हमारे शब्द प्रायः हमारी बुद्धि से अधिक तेजी से निकलते हैं। हम किसी विद्रोही किशोर और उसके कटु वचन का उत्तर तीखी फटकार के साथ देते हैं, क्योंकि हम यह मान लेते हैं कि कमरे में जिसकी आवाज़ सबसे ऊँची होगी, उसी का सबसे अधिक अधिकार होगा। परन्तु वचन एक भिन्न लय प्रस्तुत करता है। माता-पिता के लिए बाइबल की आयतें, जैसे याकूब 1:19, हमें यह आज़ा देती हैं कि हम "सुनने में तत्पर, बोलने में धीमे और क्रोध करने में धीरे" हों। यह केवल सभ्य समाज के लिए कोई सुझाव नहीं है, वरन् सकारात्मक पालन-पोषण पर केन्द्रित घर के लिए एक व्यावहारिक मार्गदर्शिका है।

हो सकता है कि उनके कटु वचन उनकी चिन्ताओं पर बातचीत करने के लिए एक द्वार हो। सम्भव है कि वह सहायता के लिए पुकार रहे हो, क्योंकि वे एक ऐसे विस्तृत होते हुए क्षितिज में आगे बढ़ रहे हैं जिसका उन्हें बहुत कम अनुभव है। पालन-पोषण करने वाले प्रबंधकों के रूप में, हम उनका हाथ पकड़कर उसे पिता के हाथ में रख सकते हैं। माता-पिता होने के नाते हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे इस बात की सच्ची कहानियाँ सुनें और देखें कि हम जीवन के इन पड़ावों को कैसे पार करते हैं।

जब हम बोलने में धीमे होते हैं, तब हम आत्मिक प्रबन्धन का कार्य कर रहे होते हैं। हम "पलटकर उत्तर देने" से मिलने वाली सन्तुष्टि की अपेक्षा बच्चे की आत्मा को अधिक मूल्यवान मानने का चुनाव करते हैं। अधिकांश माता-पिता "सुनने" में अपना समय केवल इस उद्देश्य से लगाते हैं कि वे प्रत्युत्तर तैयार कर सकें। हम किशोरावस्था के विद्रोह के पीछे छिपे भय या भ्रम को नहीं सुन रहे होते हैं। हम तो प्रायः केवल ऐसे अवसर की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं जब फिर से नियन्त्रण स्थापित कर सकें। शीघ्र सुनने का अर्थ है कि उनके संसार की वास्तविकताओं में प्रवेश करना। इसका अर्थ है कि ऐसे प्रश्न पूछना जो हृदय को छिपे रहने के स्थान पर बाहर आने का निमन्त्रण दें, न कि ऐसे आरोप लगाना जो उसे पटककर बन्द किए गए द्वार के पीछे और भी अधिक धकेल दें। जब वातावरण टकराव के धुँएँ से भरा हुआ हो, तब विद्रोही युवाओं और उनके परिवारों के लिए सबसे अधिक मसीही सलाह यह है कि हम अपना मुँह बन्द रखें, अपने कान, हृदय और मन खोलें, और आत्मा की प्रतीक्षा करें कि वह कोमल उत्तर से भरा हुआ मरहम प्रदान करे। संघर्ष के बीच किसी किशोर के साथ सम्बन्ध स्थापित करने का यही सार है।

“मुझे क्षमा करें” की सामर्थ्य: पश्चाताप शान्ति के हथियार के रूप में

माता-पिता के पश्चाताप में एक ऐसी सामर्थ्य होती है जो भय उत्पन्न करने वाली भी होती है और सुन्दर भी होती है। हम प्रायः अपने बच्चों से क्षमा माँगने से बचते हैं, क्योंकि हमें भय होता है कि इससे हमारा अधिकार दुर्बल हो जाएगा या उनके विद्रोह को बढ़ावा मिलेगा। हम सोचते हैं कि यदि हम स्वीकार कर लें कि हम गलत थे, तो हम अपना “मुखिया” होने का स्थान खो देंगे। यह घमण्ड का भ्रम है। वास्तव में, किसी विद्रोही तक पहुँचने का सबसे सामर्थी साधन यह दृश्य होता है जब उसके माता-पिता क्रूस के चरणों में घुटने टिकाएँ हों।

जब आप अपना आपा खो बैठते हैं, जब आप प्रेम के स्थान पर अपनी प्रतिष्ठा की इच्छा से प्रेरित होकर व्यवहार करते हैं, तब सबसे पहले आपको ही कहना चाहिए, कि “मुझे क्षमा करें।” यही बात तब भी लागू होती है जब आप व्यवस्था का उपयोग मार्गदर्शन के स्थान पर हथौड़े के समान करते हैं, क्योंकि प्रेरित पौलुस कहता है कि व्यवस्था उस शिक्षक के समान है जो हमें मसीह तक ले जाती है। तो क्या उसे हमारे बच्चों को भी उसी प्रकार मसीह तक नहीं ले जाना चाहिए? जब हम गलत हों, तब क्षमा माँगना निर्बलता का चिन्ह नहीं है। यह सुसमाचार से परिपूर्ण सामर्थ्य का चिन्ह है। यह आपके बच्चे को दिखाता है कि आप भी एक ऐसे ही पापी हैं जो एक महान राजा के अधिकार के अधीन हैं। यह उस सुसमाचार की पुष्टि करता है जिसका आप प्रचार करते हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि आप अपने क्लेशों में भी आनन्दित हो सकते हैं, क्योंकि उन क्लेशों के द्वारा परमेश्वर आपको अधिक से अधिक यीशु के स्वरूप में ढाल रहा होता है, और आपको उसके प्रति अधिक से अधिक प्रेम करना सिखा रहा होता है, क्योंकि उसने आपको क्षमा किया है। यदि आप अपने बच्चों से कहते हैं कि उन्हें एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है, परन्तु ऐसा व्यवहार करते हैं मानो आपको कभी पश्चाताप करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती, तो आप उन्हें यह सिखा रहे होते हैं कि मसीही जीवन सिद्ध लोगों का प्रदर्शन माल है, न कि टूटे हुए लोगों के लिए चंगाई का स्थान है। एक माता-पिता का “मुझे क्षमा करें” कहना, बच्चे के मन की रक्षात्मक दीवारों को उताना तोड़ सकता है जितना एक हजार उपदेश भी नहीं तोड़ सकते, क्योंकि यह उन्हें दिखाता है कि अनुग्रह केवल एक सिद्धान्त नहीं है—परन्तु वह एक जीवित वास्तविकता है, जो सबसे कठोर हृदय को भी तोड़ देता है।

सुसमाचार-केंद्रित वार्तालाप: उपदेश दिए बिना बातचीत करना

एक मसीही परिवार में सबसे बड़ी चुनौती प्रायः यह होती है कि रविवारीय पाठशाला की बाइबल कहानियों के द्वारा किशोरों के जीवन की कठोर वास्तविकताओं तक कैसे पहुँचा जाए। हम जानना चाहते हैं कि विश्वास के विषय में एक किशोर से कैसे बात करें ताकि हमारी बातें किसी यत्नवत् बोलने वाले व्यक्ति के समान या धार्मिक पुस्तिका जैसी न लगें। समस्या यह है कि हम प्रायः सुसमाचार को उस व्यक्ति के रूप में जानने के स्थान पर, जिसे जानना आवश्यक है, उन नियमों के समूह के रूप में मानते हैं जिनका पालन किया जाना चाहिए। हमारी बातचीत उपदेश बन जाती है, क्योंकि हमें उनके आत्मिक प्रेम की अपेक्षा उनके आज्ञाकारी व्यवहार की अधिक चिन्ता रहती है। और यदि मसीही विश्वास के विषय में हमारी समझ केवल इतनी ही है, तो सबसे पहले हमें पश्चाताप करते हुए प्रभु की ओर फिरना चाहिए।

यीशु के विषय में बिना उपदेश दिए बात करने के लिए, हमें उसे दैनिक जीवन की साधारण और कठोर वास्तविकताओं से जोड़ना होगा। इसका अर्थ है कि उन्हें यह दिखाना है कि सुसमाचार उनके अकेलेपन, उनकी पढ़ाई के दबाव, और उनकी सामाजिक घबराहट पर कैसे लागू होता है। उन्हें केवल यह मत कहिए, कि “अच्छे बनो।” उन्हें बताइए कि उनकी टूटी-

एक विद्रोही किशोर का बाइबल आधारित पालन-पोषण कैसे करें

बिखरी दशा में भी परमेश्वर उनसे प्रेम करता है। उन्हें बताइए कि परमेश्वर ने आपको आपकी टूटी-बिखरी हुई दशा में भी ग्रहण किया है। अपने संघर्षों को उनके साथ बाँटिए—कि मसीह ने आपकी असफलताओं में आपसे कैसे भेंट की और आज भी करता है, तथा उसका अनुग्रह ही एकमात्र ऐसी बात है जो हमें संसार की मलिनता में गिरने से बचाए रखती है। इससे बहुत बड़ा परिवर्तन आएगा।

सुसमाचार-केंद्रित बातचीत में माता-पिता कोई दूर खड़ा न्यायी नहीं, वरन् एक सहयात्री होते हैं। वे उसी मार्ग पर चल रहे होते हैं, केवल सम्भवतः थोड़ा आगे चल रहे होते हैं। सच्चे चेले बनाने वाले यह समझते हैं कि अनुसरण करने के योग्य केवल एक ही स्वामी है। सुसमाचार-केंद्रित बातचीत उस कला का नाम है जिसमें उस हृदय के सामने मसीह की सुन्दरता को प्रस्तुत किया जाता है, जो इस समय परछाइयों के पीछे दौड़ रहा है, क्योंकि उसके हृदय की सच्ची संतुष्टि केवल उसी में है। (और परछाइयों के पीछे दौड़ने का यह प्रलोभन वास्तव में किशोरावस्था के बाद समाप्त नहीं हो जाता; यह केवल भिन्न-भिन्न रूप धारण कर लेता है।) यदि हम चाहते हैं कि हमारे किशोर हमारी बात सुनें, तो हमें बाइबल का उपयोग सुधारने के हथियार के रूप में करना छोड़कर, उसे उस खजाने तक पहुँचाने वाले मानचित्र के रूप में उपयोग करना आरम्भ करना होगा। हम मसीह के विषय में किसी कठोर स्वामी के रूप में नहीं, वरन् उसके रूप में बताते हैं, जो हमें अपने घर वापस ले जाने के लिए हमारे विद्रोह करने वाले संसार में आया। यही बाइबल की छुटकारे की कहानी है, जो उत्पत्ति 3 से आरम्भ होकर प्रकाशितवाक्य तक चलती है। यही बाइबल की उस छुटकारे की प्रेम-कथा है, जो अपनी दुल्हिन को अजगर से बचाता है।

4

अनुशासन का व्यवहारिक पक्ष

बिना कड़वाहट के सीमाएँ तय करना: अहंकार की नहीं, आत्मा की रक्षा करना

जिस घर की पहचान विद्रोह के कारण होने वाले निरन्तर टकराव से होती है, वहाँ सीमाओं को प्रायः काँटेदार तारबाड़ के समान देखा जाता है, जिसका उद्देश्य किसी बन्दी को भीतर ही रोके रखना है। परन्तु बाइबल आधारित अनुशासन का उद्देश्य बन्दी बनाना नहीं, वरन् सुरक्षा प्रदान करना है। समस्या तब उत्पन्न होती है जब हमारे नियम धैर्यवान माता-पिता के प्रेम से नहीं, वरन् धैर्य खो चुके माता-पिता की झुंझलाहट से जन्म लेते हैं। हम कोई एक सीमा इसलिए निर्धारित करते हैं क्योंकि हम बार-बार लज्जित होने से थक चुके होते हैं या अपना जीवन अधिक शान्त बनाना चाहते हैं, तब हम अपने बच्चों को क्रोधित होने के लिए उकसाते हैं। हम अपनी सुविधा के लिए व्यवस्था का उपयोग कर रहे होते हैं, और उसका परिणाम कड़वाहट होता है। परन्तु यह झुंझलाहट कहाँ से आती है, और प्रेम कहाँ से आता है? हमारा अपना शरीर केवल झुंझलाहट ही उत्पन्न कर सकता है। परन्तु जो प्रभु हममें वास करता है, वह प्रेम उत्पन्न कर चुका है। और यदि हम उसके हैं, तो वह अपनी आत्मा के द्वारा हममें वास करता है।

कड़वाहट के बिना सीमाएँ निर्धारित करने के लिए माता-पिता को अपनी व्यक्तिगत पसन्द का क्रूर शासक नहीं, वरन् परमेश्वर के मानकों का भण्डारी बनकर कार्य करना चाहिए। घर का प्रत्येक नियम ऐसे "क्यों" से जुड़ा होना चाहिए, जो बच्चे और माता-पिता दोनों से बढ़कर हो। हम केवल इसलिए सत्य बोलने की अपेक्षा नहीं करते कि इससे हमारा जीवन सरल हो जाता है। परन्तु हम इसकी अपेक्षा इसलिए करते हैं, क्योंकि हमारा स्वामी सत्य है। उसका मार्ग सच्चा है। उसका मार्ग व्यवस्थित है। इसलिए हम केवल उनकी गतिविधियों को नियंत्रित करने के लिए घर लौटने का समय निर्धारित नहीं करते हैं। हम ऐसा उनके प्राण को रात के अन्धकार की छाया से सुरक्षित रखने के लिए करते हैं। एक शत्रु है जो उन्हें नष्ट करना चाहता है। कभी-कभी चार वर्ष के बच्चे को व्यस्त सड़क के खतरों को समझाना अधिक आसान होता है। परन्तु अपने किशोर बच्चे के प्रति प्रेम हमारे हृदय को प्रेरित करेगा कि हम उससे नशीले पदार्थों के दुरुपयोग, लैंगिक पाप, अधिकार, सम्बन्धों, प्रभाव तथा ऐसी अनेक बातों की वास्तविकताओं पर चर्चा करें। किशोरों के लिए बाइबल आधारित अनुशासन में स्पष्ट और निष्कपट व्यवहार की आवश्यकता होती है। जब बच्चा समझ जाता है कि यह सीमा उसके हृदय को संसार के छल-कपट के फलों से सुरक्षित रखने के लिए है, तब वह नियम पिजरा नहीं, वरन् किसी खतरनाक पहाड़ी मार्ग पर लगी सुरक्षा-पट्टी के समान बन जाता है। यह सुसमाचार की गरमाहट में लिपटी हुई व्यवस्था की दृढ़ता है।

स्वाभाविक परिणाम और परमेश्वर की दया: मोर्चे पर डटे रहना

परमेश्वर जिस प्रकार हमें हमारे अपने चुनावों का भार अनुभव करने देता है, उसमें एक कठोर दया भी दिखाई देती है। अपने भय के कारण हम प्रायः अपने किशोर बच्चों को उनके विद्रोह के परिणामों से "बचाने" का प्रयास करते हैं। हम उनका अर्थ दण्ड भर देते हैं, शिक्षक को समझाकर अनुत्तीर्ण होने से बचा लेते हैं, या उनके सामाजिक जीवन में हुई क्षति को किसी प्रकार सँभाल लेते हैं। ऐसा करके हम बिना जाने परमेश्वर का स्थान लेने का प्रयास करते हैं और अपने बच्चों को उसी संघर्ष से वंचित कर देते हैं जिसके लिए उन्हें जागने की आवश्यकता है। वास्तविक अनुशासन का अर्थ है कि एक कदम पीछे हट जाना और उन्हें अपने कार्यों के स्वाभाविक परिणामों का सामना करने देना।

यदि कोई बच्चा काम करने से इन्कार करता है, तो उसका स्वाभाविक परिणाम भूख या अभाव होता है। यदि कोई बच्चा किसी डिजिटल उपकरण का भरोसेमन्द उपयोग नहीं करता, तो उसका स्वाभाविक परिणाम उस उपकरण का उससे ले लिया जाना होता है। यह कानूनी अर्थ में "दण्ड" नहीं है, वरन् परमेश्वर के प्रबन्धन का एक शिक्षाप्रद साधन है। सुसमाचार-केंद्रित माता-पिता तब बच्चे को छोड़कर नहीं चले जाते जब उसे अपने कर्मों के परिणाम भोगने पड़ते हैं। हम उसी कठिन परिस्थिति में उसके साथ बने रहते हैं। हम उसे असफल होने देते हैं, परन्तु उसे अकेले असफल नहीं होने देते। हम उससे कहते हैं, कि "यह उस निर्णय का भार है जो तुमने स्वयं चुना है, और यह वास्तव में भारी है। मैं इस कठिन परिस्थिति में तुम्हारे साथ बैठूँगा, परन्तु तुम्हारे कर्मों से यह भार नहीं उतारूँगा, क्योंकि यही भार तुम्हें क्रूस तक ले जाने के लिए है।" यही छड़ी और लाठी का सन्तुलन है—छड़ी, जो सुधार होने देती है, और लाठी, जो यह सुनिश्चित करती है कि इस पूरी प्रक्रिया में बच्चे को कभी त्यागना न जाए। और अच्छा चरवाहा इन दोनों का उपयोग करता है।

किन लड़ाइयों को लड़ना है: विवेक और दीर्घकालीन संघर्ष का धैर्य

हर बात ऐसी नहीं होती जिसके लिए अन्त तक संघर्ष करना आवश्यक हो। आधुनिक मसीही पालन-पोषण की सबसे बड़ी असफलताओं में से एक यह है कि हम "पाप" के विषय और "पसन्द या शैली" के विषय में भेद नहीं कर पाते हैं। हम बालों की लम्बाई, संगीत के चुनाव, या शयनकक्ष की अव्यवस्था जैसी बातों पर अपने सम्बन्धों की पूँजी खर्च कर डालते हैं। फिर जब बातचीत अश्लील सामग्री, पहचान, या पवित्रशास्त्र के अधिकार जैसे गम्भीर विषयों पर आती है, तब हम आश्चर्य करते हैं कि हमारे पास कोई प्रभाव क्यों नहीं बचा। पालन-पोषण के प्रबन्ध को भली-भाँति निभाने के लिए उच्च स्तर के आत्मिक विवेक की आवश्यकता होती है।

पालन-पोषण की वास्तविक दृढ़ता इस बात को जानने में है कि कब अटल खड़े रहना है और कब जाने देना है। हमें उन बातों पर दृढ़ रहना चाहिए जो राजा की प्रत्यक्ष आज्ञाओं से सम्बन्धित हैं—जैसे परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह, प्राण की सुरक्षा, और परिवार की पवित्रता। परन्तु जिन बातों में केवल किशोरावस्था की अभिव्यक्ति की अपरिपक्वता झलकती है, उनमें हमें ढील देने का विवेक होना चाहिए। यदि आप हर छोटी सी भूल को ईश्वरविज्ञान सम्बन्धी संकट बना देंगे, तो अन्ततः आपका किशोर आपकी किसी भी बात पर ध्यान देना बन्द कर देगा। घर-परिवार के व्यवहारिक संचालन में हमें "साँपों के समान बुद्धिमान" होना चाहिए। हम उनके हृदय के "रणनीतिक केन्द्र" को पहचानने का प्रयास करते हैं। यदि हम बिखरे हुए कमरे की लड़ाई जीत लें, परन्तु इस प्रक्रिया में बच्चे का हृदय ही खो दें, तो हम अपने दायित्व में असफल हो जाते हैं। हम दीर्घकालीन दृष्टि के साथ कार्य कर रहे हैं। हम ऐसे फसल की प्रतीक्षा कर रहे हैं जो सम्भव है कि दस वर्षों तक भी दिखाई

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

न दे। इसलिए छोटी-छोटी बातों में धैर्य रखने का साहस आवश्यक है, ताकि व्यवस्था और सुसमाचार के अधिक महत्वपूर्ण विषयों के प्रति हम विश्वासयोग्य बने रहें। स्मरण रखें, कि हमारा उद्देश्य केवल इतना ही नहीं है कि वे हमारी आज्ञा मानें, परन्तु यह है कि वे प्रभु के अधीन हों, उसके साथ चलें, और यह देखें कि वह और उसके मार्ग कितने सुन्दर हैं।

5

दीर्घकालीन दृष्टिकोण

दूर खड़ा पिता: प्रतीक्षा की पीड़ा और उसकी रूपरेखा

उड़ाऊ पुत्र की कहानी प्रायः सुअरों के बीच पड़े उस लड़के के दृष्टिकोण से सुनाई जाती है, परन्तु वास्तव में इस कहानी का केन्द्र उस पिता में है जो अपनी सम्पत्ति की सीमा पर खड़ा प्रतीक्षा कर रहा था। वह टूटे हुए हृदय को भली-भाँति सँभालना जानता है। वह उस लड़के के पीछे दूर देश तक नहीं गया। उसने उसे वापस लाने के लिए कोई दल नहीं भेजा, न ही उसके खर्च पर निगरानी रखने के लिए कोई उपकरण लगाया। वह उधार में मिले जीवन के ईश्वर विज्ञान को समझता था। उस लड़के की अपनी इच्छा थी, और उस इच्छा को जीवन की कठोर वास्तविकताओं से टकराकर स्वयं अपनी सीमा तक पहुँचना आवश्यक था। यही इस बात को दर्शाता है कि बच्चों की स्वतंत्र इच्छा के सम्बन्ध में बाइबल आधारित पालन-पोषण हमें क्या सिखाता है।

प्रतीक्षा का कठिन परिश्रम निष्क्रिय नहीं होता है। यह अनुशासित और आत्मिक परिश्रम है। यह उस व्यक्ति के समान है जो रात के सबसे घोर अन्धकार में भी बरामदे का दीपक जलाए रखता है। मार्ग से भटक गए बच्चे की प्रतीक्षा करना निरन्तर और पवित्र संघर्ष की अवस्था में जीना है। एक ओर परिस्थिति को तुरन्त "ठीक" कर देने की तीव्र मानवीय इच्छा होती है, और दूसरी ओर परमेश्वर की प्रभुता के अधीन यह आवश्यकता होता है कि परिणामों को अपना कार्य करने दिया जाए। अपने किशोर बच्चे के लिए प्रार्थना करना, पालन-पोषण के इस प्रबन्धन का सबसे कठिन रूप होता है। यह उस एकमात्र अधिकार के सामने की गई विनती है जो मनुष्य के हृदय के "दूर देश" में प्रवेश कर सकता है। यह प्रतिदिन इस आशा की अभिव्यक्ति है कि परमेश्वर हमारी माँग और सोच में मुझ से कहीं अधिक कार्य कर सकता है। यह इस सत्य को महसूस करता है कि वह हमारे द्वारा किए गए बुरे निर्णयों को भी भलाई में परिवर्तित कर सकता है।

यह इस विश्वास की अभिव्यक्ति है कि उसका आत्मा पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में दोषी ठहरता है। जब हम प्रतीक्षा करते हैं, तब हम केवल समय नहीं बिता रहे होते हैं, वरन् किशोर बच्चे के माता-पिता होने के नाते सच्ची शान्ति प्राप्त करना सीख रहे होते हैं। हम स्वामी के समय का आदर कर रहे होते हैं। हम उसके प्रबन्ध पर भरोसा कर रहे होते हैं। हम उससे सामर्थ्य माँग रहे होते हैं कि हम उसी स्थान पर दृढ़ता से खड़े रह सकें जहाँ वह पिता खड़ा था, क्षितिज की ओर दृष्टि लगाए हुए, द्वार किसी आकृति की झलक दिखाई देते ही दौड़ पड़ने के लिए तैयार, परन्तु इस बीच झूठा पश्चताप न करने का पक्का इरादा रखते हुए। यही धैर्य उन लोगों के लिए अत्यन्त आवश्यक है जो यह जानना चाहते हैं कि किशोरावस्था के विद्रोह का सामना अनुग्रह के साथ कैसे किया जाए।

वाचा में विश्राम: वह परमेश्वर जो ढूँढता है

माता-पिता के हृदय पर सबसे भारी बोझों में से एक यह भय होता है कि उनके बच्चे का विद्रोह परमेश्वर के राज्य से उसका स्थायी रूप से दूर हो जाना है। हम उसकी चुप्पी और कठोरता को देखते हैं और यह निष्कर्ष निकाल लेते हैं कि अब कहानी समाप्त हो गई है। परन्तु हृदय को विश्राम परमेश्वर की वाचा के प्रति उसकी विश्वासयोग्यता में मिलता है। हमें प्रतिदिन स्वयं को स्मरण दिलाना चाहिए कि परमेश्वर हमारे बच्चों के प्रति हमसे भी अधिक प्रतिबद्ध है। उसने तब हमारी खोज की जब हम अपने ही पाप की झाड़ियों में छिपे हुए थे। वही वह चरवाहा है जो नित्यानवे भेड़ों को छोड़कर उस एक भेड़ की खोज में निकल पड़ता है जो काँटों में उलझ गई है। यदि उसने हमारे लिए ऐसा किया, तो क्या वह हमारे बच्चे के लिए भी ऐसा नहीं कर सकता है? वह ऐसा करने के लिए उनका ऋणी नहीं है। न ही वह हमारा ऋणी है कि उन्हें वापस ले आए। परन्तु हम उसके स्वभाव को जानते हैं। अपने ही नाम के निमित्त उसने पहले भी असंख्य लोगों का बार-बार उद्धार किया है। वह इसी प्रकार की दया के लिए जाना जाता है। इसलिए हम प्रतिदिन उसकी ओर फिरते हैं।

परमेश्वर की प्रतिबद्धता पर भरोसा रखने का अर्थ यह महसूस करना है कि उसका अनुग्रह न तो किसी आई फोन से भयभीत होता है, न बुरी संगति से, और न ही दस वर्षों की चुप्पी से। वह उस विद्रोह का भी उपयोग कर सकता है जिससे हम भय खाते हैं, ताकि उसके द्वारा वह उस टूटे हुए मन को उत्पन्न करे जिसकी उसे अपेक्षा है। भले ही हमारे बच्चे हमारी मेज को छोड़कर चले जाएँ, परन्तु वे सर्वशक्तिमान प्रभु की उपस्थिति से कभी दूर नहीं जा सकते। जब हम वाचा को निभाने वाले परमेश्वर में विश्राम पाते हैं, तब हम ऐसे अनाथों के समान व्यवहार करना छोड़ देते हैं जिनकी विरासत उनके अपने कार्यों पर निर्भर रहती है। वरन् हम ऐसे प्रबन्धकों के समान जीवन जीते हैं जो जानते हैं कि स्वामी की अपनी सम्पत्ति में दीर्घकालीन रुचि है। हम इस प्रतिज्ञा को टढ़ता से धामे रहते हैं कि परमेश्वर का वचन कभी निष्फल होकर नहीं लौटता, चाहे वह किशोरावस्था की अपरिपक्वता की अनेक परतों के नीचे दबा हुआ ही क्यों न दिखाई दे। परन्तु वही और उसकी प्रतिज्ञाएँ हमारा दृढ़ आधार हैं जो तब भी हमें स्थिर बनाए रखती हैं जब हमारे पैरों तले की भूमि डगमगाने लगती है।

दौड़ पूरी करना: संघर्ष की तपिश में अपने विश्वास की रक्षा करना

जब वह व्यक्ति जिसे आप सबसे अधिक प्रेम करते हैं, उन्हीं सब बातों से दूर जा रहा हो जिन्हें आप सबसे अधिक मूल्यवान मानते हैं, तब आप अपने विश्वास को कैसे दृढ़ बनाए रखते हैं? यही दीर्घकालीन दृष्टिकोण की अन्तिम परीक्षा है। बहुत से माता-पिता अपने बच्चे के विद्रोह को अपने ही आत्मिक जीवन के विनाश का कारण बनने देते हैं। वे "क्यों" और "यदि ऐसा हो गया तो क्या होगा" जैसे प्रश्नों में इतने उलझ जाते हैं कि स्वामी के साथ अपने स्वयं के चलने पर ध्यान देना ही छोड़ देते हैं। उन्होंने अपने घर की मूर्तियों को सुसमाचार में मिलने वाले अपने आनन्द को नष्ट करने दिया।

प्रबन्धन की माँग है कि आप अपनी दौड़ पूरी करें, चाहे आपका बच्चा आपके साथ दौड़ रहा हो या सूअरों के बीच बैठा हो। आपको अपने प्राण को "अनुत्तरित" प्रार्थनाओं की कड़वाहट से सुरक्षित रखना चाहिए। आपको परमेश्वर के वचन से निरन्तर आत्मिक पोषण प्राप्त करते रहना चाहिए, स्थानीय कलीसिया में सेवा करते रहना चाहिए, और अपनी मुख्य पहचान एक विद्रोही बच्चे के माता-पिता के रूप में नहीं, वरन् परमेश्वर की सन्तान के रूप में पानी चाहिए। आपके बच्चे को यह देखना चाहिए कि आपका विश्वास ऐसा नाजुक नहीं है जो उसके विरोध करने पर टूट जाए। उसे ऐसा विश्वास दिखाई देना चाहिए जिसकी नींव उस चट्टान पर रखी गई है जो उसके विद्रोह से कहीं अधिक ऊँची है।

एक विद्रोही किशोर का बाइबल आधारित पालन-पोषण कैसे करें

दौड़ पूरी करने का अर्थ यह विश्वास करना है कि स्वामी अस्वीकार के इस समय का भी उपयोग आपको उस अनन्त महिमा के भार के लिए तैयार करने में कर रहा है। हम गलियारे में कुछ समय की शान्ति प्राप्त करने के लिए परिश्रम नहीं कर रहे हैं, वरन् अनन्त पुनरुत्थान की आशा के लिए कर रहे हैं। एक ओर, यह पुनरुत्थान मसीह के पुनरुत्थान के द्वारा पहले ही आरम्भ हो चुका है। क्योंकि मसीह जी उठा, इसलिए सभी विश्वासी भी जी उठेंगे। पौलुस हमें स्मरण दिलाता है कि हम पहले ही मसीह के साथ स्वर्गीय स्थानों में बैठाए जा चुके हैं। दूसरी ओर, अभी भी एक कार्य शेष है, अर्थात् पवित्रीकरण का कार्य। और पौलुस तीमुथियुस से कहता है कि बच्चों का पालन-पोषण करना एक उत्तम कार्य है। इसमें किशोर बच्चे भी सम्मिलित हैं। इसलिए मसीह में बढ़ने, परमेश्वर के राज्य की उन्नति करने, और दूसरों को हढ़ करने के हमारे प्रयासों का ऐसा स्थायी महत्व है जो हमारे इस सांसारिक जीवन के बाद भी बना रहता है। पुनरुत्थान हमारे सभी कार्यों और उनके अन्तिम उद्देश्य को समझने के दृष्टिकोण को बदल देता है। यह दूसरों तथा किशोर बच्चों के प्रति हमारे व्यवहार को भी परिवर्तित कर देता है। इस सत्य के कारण हमारा परिश्रम व्यर्थ नहीं होता है।

रात लम्बी हो सकती है और पथरीली भूमि ठण्डी हो सकती है, परन्तु सूर्य अवश्य उदय होगा। और जब वह उदय होगा, तब हम विश्वासयोग्य पाए जाएँ—इसलिए नहीं कि हम सिद्ध माता-पिता थे, वरन् इसलिए कि हम ऐसे प्रबन्धक थे जिन्होंने अपने बच्चों का पालन-पोषण करना कभी नहीं छोड़ा और फसल के स्वामी पर भरोसा रखना भी कभी नहीं छोड़ा।

व्यावहारिक कदम: वास्तविक जीवन में विद्रोही किशोर बच्चे का बाइबल आधारित पालन-पोषण कैसे करें

एक समय ऐसा आता है जब ईश्वर विज्ञान को रसोई में लौटकर मेज पर आकर बैठना पड़ता है। सिद्धान्त आवश्यक हैं, परन्तु जब दरवाज़ा जोर से धक्का देकर बंद किया जाता है और जब कटु वचन सुनाई देते हैं, तब माता-पिता को यह भी जानना चाहिए कि अब उन्हें क्या करना चाहिए। आगे दिए गए कदम कोई अचूक उपाय नहीं हैं और न ही वे किसी निश्चित परिणाम को सुनिश्चित करते हैं। ये सुसमाचार-केन्द्रित प्रबन्ध के साधारण परन्तु निरन्तर अपनाए जाने वाले अभ्यास हैं—ऐसी प्रतिदिन की विश्वासयोग्यता, जिसका उपयोग परमेश्वर समय के साथ कठोर हृदय को कोमल बनाने के लिए करता है।

1. उत्तर देने से पहले कुछ क्षण ठहरें

जब तनाव बढ़ता है, तब पहली स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है कि हम तुरन्त और ऊँचे स्वर में प्रतिक्रिया करें। परन्तु ऐसी प्रतिक्रिया शायद ही कभी धार्मिकता उत्पन्न करती है। इसलिए कुछ क्षण ठहरें। उत्तर देने में जल्दबाज़ी न करें। प्रार्थना करें। बुद्धि और समझ को परमेश्वर से माँगें। जो माता-पिता ठहरकर उत्तर देते हैं, वे नियन्त्रण नहीं, वरन् प्रभाव को चुनते हैं। याकूब 1:19 कोई अमूर्त सिद्धान्त नहीं है; यह घर के गलियारे, भोजन की मेज और देर रात होने वाली बहस—हर परिस्थिति के लिए एक व्यावहारिक साधन है।

2. हृदय को बन्द करने वाले प्रश्न पूछने के स्थान पर ऐसे प्रश्न पूछें जो हृदय खोल दें

एक विद्रोही किशोर प्रायः आरोपों की अपेक्षा करता है। जब उसे आक्रमण की आशंका होती है, तो वह अपना बचाव करने लगता है। सुधार से आरम्भ करने के स्थान पर, उसकी बात जानने की इच्छा से आरम्भ करें। उससे पूछें कि वह क्या सोच रहा है, क्या महसूस कर रहा है, और किस बात से भयभीत है। प्रश्न प्रतिरोध को कम कर देते हैं। वे ईमानदारी के लिए

स्थान तैयार करते हैं। आप सत्य का परित्याग नहीं कर रहे हैं, वरन् उसे पहुँचाने के लिए इतना सुदृढ़ पुल बना रहे हैं जो उसके भार को सहन कर सके।

3. ऐसी स्पष्ट सीमाएँ निर्धारित करें जो सुरक्षा दें, न कि दण्ड

किशोर बच्चों के लिए बाइबल आधारित अनुशासन शक्ति के संघर्ष में विजय प्राप्त करने के विषय में नहीं है। इसका उद्देश्य प्राण की रक्षा करना है। आपके घर की प्रत्येक सीमा का एक स्पष्ट उद्देश्य होना चाहिए, जो सत्य और सुरक्षा से जुड़ा हो। नियम के पीछे का कारण उन्हें समझाइए। अब वे इतने बड़े हो चुके हैं कि उसे समझ सकते हैं। शीघ्र ही वह दिन आने वाला है जब वे उन्हीं कारणों के आधार पर (न कि आपके कारण) नियमों का पालन करेंगे या उनका पालन नहीं करेंगे। जब एक किशोर यह समझ जाता है कि कोई सीमा उस पर नियन्त्रण करने के लिए नहीं, वरन् उसकी रक्षा करने के लिए बनाई गई है, तब घर का वातावरण बदलने लगता है।

4. स्वाभाविक परिणामों को अपना कार्य करने दें

विद्रोही किशोर बच्चे का पालन-पोषण करने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा यह भी है कि उसे अपने ही चुनावों का बोझ महसूस करने दिया जाए। उसे हर परिणाम से बचाते रहना उसकी परिपक्वता में विलम्ब करना है। यदि वह विश्वास तोड़ता है, तो उसकी सुविधाओं पर सीमाएँ लगा दी जाती हैं। यदि वह अपने उत्तरदायित्वों को अनदेखा करता है, तो उसके परिणामस्वरूप होने वाली हानि का अनुभव उसे स्वयं करने दिया जाता है। परन्तु उसके निकट बने रहें। परिणामों के समय उसे अकेला न छोड़ें—उसके साथ बैठें और उस परिस्थिति में उसके साथ बने रहें। परमेश्वर सत्य और उपस्थिति के इस समन्वय का उपयोग शिक्षा देने के लिए करता है।

5. जब आप असफल हों, तब सबसे पहले पश्चाताप करें

आपका धैर्य टूटेगा। आप ऐसी कोई बात कह देंगे जिसका आपको बाद में पछतावा होगा। जब ऐसा हो, तो अपने बच्चे के पास वापस जाएँ और कहें, “मैं गलत था। कृपया मुझे क्षमा करें।” यह एक छोटा सा कार्य सुसमाचार की शिक्षा देने में बहुत अधिक उपदेशों से कहीं अधिक प्रभावशाली होता है। एक पश्चाताप करने वाले माता-पिता यह दिखाते हैं कि मसीही जीवन सिद्ध होने के विषय में नहीं है—यह तो अनुग्रह के विषय में है।

6. सुसमाचार को केवल संकट के समय नहीं, वरन् सामान्य क्षणों में भी बोलें

आत्मिक बातचीत को केवल अनुशासन तक ही सीमित न रखें। कार में, भोजन की मेज पर, और दैनिक जीवन के बीच में मसीह के विषय में बातचीत करें। उनकी वास्तविक कठिनाइयों—पहचान, दबाव, मित्रता और भय—को परमेश्वर के वास्तविक स्वरूप के सत्य से जोड़ें। एक विद्रोही किशोर को यह देखने की आवश्यकता है कि सुसमाचार उसके वास्तविक जीवन से जुड़ा हुआ है, न कि केवल रविवार से।

7. अपने संघर्षों का चुनाव बुद्धि तथा संयम के साथ करें

हर विषय पर समान स्तर का सामना करना आवश्यक नहीं है। जो वास्तव में पापपूर्ण है और जो केवल एक पसन्द या व्यक्तित्व से जुड़ी हुई बात है, उनमें भेद करें। यदि आप हर बात पर संघर्ष करेंगे, तो जब कोई वास्तव में गम्भीर विषय

एक विद्रोही किशोर का बाइबल आधारित पालन-पोषण कैसे करें

सामने आएगा, तब आपकी बात का प्रभाव कम हो जाएगा। अपने अधिकार को उन अवसरों के लिए सुरक्षित रखें जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं।

8. जब आपको लगे कि कुछ भी नहीं बदल रहा है, तब प्रार्थना करें

पालन-पोषण में सबसे महत्वपूर्ण कार्यों में से कुछ कार्य ऐसे स्थानों पर होते हैं जिन्हें कोई देख नहीं सकता है। जब परिस्थिति रुकी हुई लगे, जब ऐसा प्रतीत हो कि आपके शब्द बन्द हृदय से टकराकर लौट रहे हैं, तब भी अपने बच्चे को परमेश्वर के सामने लाते रहें। प्रार्थना कोई अन्तिम उपाय नहीं है—यह उस माता-पिता का मुख्य कार्य है जो यह समझते हैं कि वे हृदयों को बदलने वाला नहीं है। परन्तु वे तो प्रबन्धक माल हैं, स्वामी नहीं हैं।

9. जब परिणाम धीमे हों, तब भी निरन्तर बने रहें

विश्वासयोग्यता प्रायः साधारण और बार-बार दोहराए जाने वाले कार्यों के रूप में दिखाई देती है। वही बातचीत। वही सीमाएँ। वही प्रार्थनाएँ। एक किशोर के हृदय में विकास प्रायः तुरन्त नहीं होता है। हमारा विकास भी तुरन्त नहीं हुआ है। सफलता को तुरन्त दिखाई देने वाले व्यवहार के परिवर्तन से न मापें। वरन् समय के साथ अपनी आज्ञाकारिता और निरन्तरता के आधार पर मापें।

10. जब व्यवहार गलत हो, तब भी सम्बन्ध को खुला बनाए रखें

एक विद्रोही किशोर को यह जानना चाहिए कि यद्यपि उसके कुछ व्यवहार स्वीकार्य नहीं हैं, तौ भी उसके माता-पिता ने उसे अस्वीकार नहीं किया है। सम्बन्ध बनाए रखें। बातचीत के लिए उसे आमन्त्रित करते रहें। उसके जीवन में उपस्थित होते रहें। जहाँ सम्बन्ध बना रहता है, वहाँ प्रभाव बढ़ता है।

विद्रोही किशोर बच्चों के साथ मसीही पालन-पोषण का यह एक लम्बा मार्ग है। यह शीघ्र पूरा नहीं होता है। यह सरल भी नहीं है। परन्तु यह विश्वासयोग्य मार्ग है। और समय के साथ परमेश्वर इस स्थिर, सुसमाचार के अनुसार ढली हुई उपस्थिति का उपयोग उस कार्य को करने के लिए करता है जिसे बल और नियन्त्रण कभी नहीं कर सकते हैं— अर्थात् हृदय तक पहुँचना।



निष्कर्ष: सुबह अवश्य होगी

एक छोटे से नगर में एक पुल है जिसे मैं जानता हूँ, जो एक अत्यन्त खतरनाक घाटी के ऊपर बना है। लगभग बीस वर्षों तक यह परियोजना ऐसी स्थिति में पड़ी रही जिसे देखकर लगता था कि इसमें कोई प्रगति नहीं हो रही है। एक सामान्य देखने वाले को यह एक असफलता जैसी दिखाई देती थी—जंग लगे लोहे के ढाँचे, बजरी के ढेर और एक ऐसी दूरी जो मानो कभी पूरी नहीं हो सकती थी। स्थानीय लोग उस पुल का मज़ाक उड़ाते हुए उसे "कहीं न पहुँचने वाला पुल" कहते थे। परन्तु सतह के नीचे, अँधेरे और कठिन परिश्रम के बीच, अभियन्ता चट्टान की गहराई में नीव का आधार स्थापित करने का अदृश्य कार्य कर रहे थे। वे जलधारा के वेग और खिसकती गाद से संघर्ष कर रहे थे, ताकि जब पुल के दोनों भाग अन्ततः आपस में मिलें, तब उसकी नीव अडिग हो सके।

विद्रोही सन्तान का पालन-पोषण करना ठीक उसी पुल के निर्माण के समान है। जहाँ वर्षों तक आपको केवल बीच की खाई ही दिखाई दे सकती है। आपको कठोर शब्दों का जंग और टूटी हुई प्रतिज्ञा के कंकड़ पत्थर ही दिखाई देती है। जब आप सभा में अकेले बैठते हैं, तब "कहीं न पहुँचने वाले पुल" जैसे व्यंग्य आपके हृदय को चुभते हैं। परन्तु पोषण करने वाला प्रबंधन के पुल को शीघ्र तैयार हो जाने से नहीं, परन्तु उसकी नीव की गहराई से आँका जाता है। आप किसी सुहाने मौसम के लिए अस्थायी पैदल-पुल नहीं बना रहे हैं। आप सुसमाचार को एक आत्मा की आधारशिला रूपी चट्टान में गहराई तक स्थापित कर रहे हैं। यह एक लम्बी दौड़ है, जिसके लिए दृढ़ और निरन्तर धैर्य की आवश्यकता होती है—ऐसा धैर्य जो वर्षों तक धूप न दिखाई देने पर भी कीचड़ में डटे रहकर अपना कार्य करता रहता है।

सुबह अवश्य होगी। हो सकता है कि वह आपकी बनाई हुई समय-सारिणी के अनुसार न हो, और वह उस "चमकदार सफलता" जैसी भी न दिखाई दे जिसकी आपने कभी कल्पना की थी। परन्तु फसल का स्वामी निष्क्रिय नहीं है। वह दीर्घकालीन योजना के अनुसार कार्य करने वाला परमेश्वर है। उसी ने जंगल में चालीस वर्षों के दौरान एक हत्यारे को छुटकारा दिलाने वाला बनाया, और तीन दिनों में कब्र को विजय में बदल दिया। प्रभु में आपका परिश्रम कभी व्यर्थ नहीं होता। आँसुओं के साथ की गई प्रत्येक प्रार्थना, कठोर मुख के सामने विनम्रता से कहा गया प्रत्येक वाक्य "मुझे क्षमा करें," और काँपते हाथों से दृढ़ता के साथ बनाए रखी गई प्रत्येक सीमा, उस पुल में अपने स्थान पर रखे जा रहे एक-एक शहतीर के समान है। एक दिन वह खाई भर जाएगी। एक दिन इस संसार की सड़कें समाप्त हो जाएँगी और उनके स्थान पर आने

वाले जगत में सोने की सड़कें होंगी। तब आप देखेंगे कि स्वामी विद्रोह के संघर्ष का उपयोग ऐसी रचना तैयार करने के लिए कर रहा था जो अनन्तकाल का भार सहन कर सके।

थके-माँदे लोगों के लिए प्रार्थना

हे पवित्र और धीरजवन्त पिता, हम भारी मन और थके हुए हाथों के साथ तेरे पास आते हैं। हम वे माता-पिता हैं जिन्हें ऐसा लगता है कि मानो हम यह लड़ाई हारते जा रहे हैं। हम अंगीकार करते हैं कि हमने इस युद्ध को संसार के हथियारों से लड़ने का प्रयास किया है—ऊँची आवाजों, कठोर नियन्त्रण, और अपने ही घमण्ड की मलिनता के सहारे किया है। हमें क्षमा कर कि हमने अपनी सन्तानों को अपनी मूर्ति बना लिया और उनकी आज्ञाकारिता को अपना उद्धारकर्ता बना लिया।

हमें मोर्चे पर डटे रहने का साहस दे। हमें अनुग्रह से भरी ऐसी वाणी दें जो मौन का सामना होने पर भी प्रेम के साथ सत्य बोले। संसार का भय हमारे भीतर से दूर कर दे और उसके स्थान पर अपनी ईश्वरीय व्यवस्था पर अटल भरोसा भर दे। हम अपनी पथभ्रष्ट सन्तानों को तेरे हाथों में सौंपते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि तू ही वह महान चरवाहा हैं जो भटके हुएों को ढूँढता है।

थकी हुई उस माँ को सामर्थ्य दे जो रसोई के एकान्त में रोती है। उस थके हुए पिता को हट कर जो जोर से बन्द किए गए दरवाजे की चोट को मानो अपने शरीर पर पड़ा हुआ प्रहार अनुभव करता है। उन्हें स्मरण करा कि वे स्वामी नहीं हैं, वरन् कुछ समय के लिए उन्हें सौंपी गई आत्माओं के केवल प्रबन्धक हैं, और यह कि तेरा अनुग्रह इस सारी अव्यवस्था के लिए पर्याप्त है। हमें आनन्द के साथ अपनी दौड़ इस प्रतिज्ञा में विश्राम करते हुए पूरी करने दे कि सुबह अवश्य होगी और तू ही वह परमेश्वर है जो सब कुछ नया कर देता है।

आमीन।



डॉ. रिचर्ड जॉन परहार्ड, कीव थियोलॉजिकल सेमिनरी में सन् 2003 से बाइबल और थियोलॉजी के प्रोफेसर (आचार्य) रहते हुए, वाइस प्रेसिडेंट (उपाध्यक्ष) और एकेडमिक डीन (शैक्षणिक अध्यक्ष) के तौर पर काम करते हैं। उन्होंने बैपटिस्ट बाइबल सेमिनरी से सिस्टमैटिक थियोलॉजी में पी.एच.डी. (मैग्रा कम लॉड) और डालस थियोलॉजिकल सेमिनरी से बाइबल की व्याख्या में मास्टर्स इन थियोलॉजी की डिग्री हासिल की है। वे “एंटीओसीन थियोरिया इन द राइटिंग्स ऑफ थियोडोर ऑफ मोपसुएस्तिया एण्ड थियोडोरेट ऑफ सायरस” (Antiochene Theōria in the Writings of Theodore of Mopsuestia and Theodoret of Cyrus) (फोर्ट्रेस प्रेस, 2015) पुस्तक के लेखक भी हैं।

डॉ. लैरी ओट्स, मारनाथा बैपटिस्ट सेमिनरी में लम्बे समय से बाइबल के प्रोफेसर (आचार्य) और पूर्व में सन् 2009-2019 तक अध्यक्ष रहे हैं। उन्होंने वाटरटाउन, विस्कॉन्सिन में मारनाथा बैपटिस्ट यूनिवर्सिटी में 40 से अधिक वर्षों तक सेवा की है। मारनाथा बैपटिस्ट यूनिवर्सिटी से ही स्नातक होने के बाद, उन्होंने सिस्टमैटिक थियोलॉजी में पी.एच.डी. की है और वे मौलिकतावाद और बैपटिस्ट इतिहास के विशेषज्ञ हैं।

